फैज की बेटी की हुई भारत बुलाकर बेइज्जती, कट्टरता के दबाव में न बोलने दिया न दी ठहरने के लिए जगह

दिल्ली, जनज्वार मशहूर शायर फैज अहमद फैज के नाती ने पूछा, क्या यही आपका शाइनिंग इंडिया है। मेरी 72 वर्षीय मां को औपचारिक तौर पर निमंत्रित करने के बावजूद कार्यक्रम में न हिस्सा लेने दिया और न बोलने दिया गया। यह शर्मनाक है...

पाकिस्तान की ख्यात पत्रकार और मशहूर शायर फैज अहमद फैज की बेटी मोनीजा हाशमी को भारत में आयोजित एक कार्यक्रम में निमंत्रित किए जाने के बाद हिस्सा नहीं लेने दिया गया।

गौरतलब है कि दिल्ली में चल रहे 15 वें एशिया मीडिया समिट में हरदिल अजीज शायर रहे फैज की बेटी मोनीजा जोकि खुद पाकिस्तान की एक ख्यात पत्रकार हैं, को बतौर स्पीकर आमंत्रित किया गया था। मगर आमंत्रण के बावजूद उन्हें इसमें हिस्सेदारी नहीं करने दी गई। यह आयोजन 10 से 12 मई के बीच आयोजित किया गया था।

मोनीजा हाशमी के बेटे अली हाशमी ने ट्वीट कर पीएमओ और विदेश मंत्री सुषमा स्वराज से पूछा कि क्या यही आपका शाइनिंग इंडिया है। मेरी 72 वर्षीय मां को औपचारिक तौर पर निमंत्रित करने के बावजूद कार्यक्रम में न हिस्सा लेने दिया और न बोलने दिया गया। यह शर्मनाक है।

शायर फैज और बेटी मोनीजा

भारत में इस कार्यक्रम का आयोजन सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय और प्रसार भारती द्वारा किया गया था, मगर मोनीजा के साथ की गई इस बदसलूकी पर उसने अपने होंठ सी लिए हैं, उल्टा उसके प्रवक्ताओं की तरफ से कहा जा रहा है कि उन्हें इस घटना के बारे में कोई जानकारी नहीं है।

मीडिया में आई जानकारी के मुताबिक फैज फाउंडेशन ट्रस्ट के सूत्रों ने बताया कि जब मोनीजा हाशमी नई दिल्ली स्थित होटल पहुंची तो उन्हें बताया गया कि उनके नाम पर कोई बुकिंग ही नहीं की गई है। बाद में मोनीजा हाशमी को एशिया पैसेफिक इंस्टीट्यूट फोर ब्रॉडकास्टिंग डेवलेपमेंट (एआईबीडी) के डायरेक्टर ने बताया कि एशिया मीडिया समिट में उन्हें बोलने की इजाजत नहीं दी जाएगी।

यहां एक बात और गौरतलब है कि भारत में मीडिया समिट का आयोजन पहली बार हुआ। इससे पहले आयोजित होने वाले मीडिया समिट में मोनीजा शामिल होती रही हैं।

मोनीजा उन्हीं फैज की बेटी हैं जिनके पिता की ज्यादातर रचनाएं सैन्य तानाशाह जनरल जिया उल हक के शासनकाल में प्रतिबंधित कर दी गई थीं। प्रतिबंधित रचनाओं में प्रसिद्ध रचना 'सब ताज उछाले जाएंगे, सब तख्त गिराए जाएंगे' भी शामिल रही है।

फैज जोकि भारत—पाकिस्तान दोनों जगह समान रूप से ख्यात हैं, हर किसी की जुबान में उनकी शायरी रहती है, भारत में उनकी बेटी के साथ इस बदसलूकी पर सोशल मीडिया पर तरह तरह की प्रतिक्रियाएं आ रही हैं। मोनीज़ा हाशमी को कार्यक्रम में हिस्सा लेने से रोकने और उन्हें पाकिस्तान लौटाने के कदम की मीडिया में भी भारी आलोचना हो रही है। कहा जा रहा है कि पाकिस्तानी सरकार फैज से डरती थी, मगर भारत की मोदी सरकार तो उनकी बेटी से ही डर गई।

मोनीजा की बेइज्जती पर वरिष्ठ पत्रकार पंकज चतुर्वेदी कहते हैं, '1951 में षडयंत्र रचने के आरोप में गिरफ्तार करने के बाद फैज अहमद के पाकिस्तान सरकार से रिश्ते जीवन पर्यंत खराब रहे। उन्हें जीवन का काफी वक्त जेल में गुजारना पड़ा। जेल से निकलने के बाद उन्होंने लगभग दो दशक भारत और रूस में निर्वासन में बिताए। उस फैज की बेटी का भारत में अपमान शर्मनाक है।'

इस घटना के बाद बीबीसी से हुई बातचीत में मोनीजा ने कहा, "इसमें मुझे भी आमंत्रित किया गया और पूछा गया कि क्या मेरे पास वीज़ा है। मैंने हां में जवाब दिया क्योंकि फ़ैज़ फाउंडेशन के आधार पर मुझे छह महीने का मल्टी-एंट्री वीज़ा दिया गया था। ऐसे में मेरे पास वीज़ा था। इसके बाद उन्होंने कहा कि आप आएं और मुझे एक विषय दिया, जिस पर मुझे बोलना था। इसके बाद मैं 9 मई को ताज पैलेस होटल के डिप्लोमेटिक एनक्लेव पहुंची और अपने कमरे के बारे में पूछा तो रिसेप्शन पर मुझे बताया गया कि मेरे नाम से कमरा बुक नहीं है।"

मोनीजा आगे कहती हैं, "जब इससंबंध में एआईबीडी के निदेशक आए तो उन्होंने कहा कि मुझे माफ़ कर दीजिए, मुझे अभी-अभी पता चला है, 'उन्होंने' मुझसे ऐसा कहा है कि आप इस सम्मेलन में भाग नहीं ले सकतीं और सम्मेलन के लिए पंजीकरण भी नहीं करा सकती हैं।"

मोनीजा आगे कहती हैं, "भारत सरकार के डर की वजह आखिर क्या थी? हम क्या पाकिस्तान से छूत की बीमारी लेकर आए हैं? मतलब रजिस्ट्रेशन तक नहीं करने दिया गया। ये अच्छा नहीं हुआ? पाकिस्तान अच्छा है या बुरा है, लेकिन वजूद में है। मेजबान ये व्यवहार नहीं करता है मेहमान के साथ।"

सवाल यह है कि यह 'उन्होंने' आखिर एआईबीडी निदेशक ने किसके लिए कहा है, क्या यह कट्टरपंथियों के लिए है, क्योंकि फैज का हिंदुत्व कट्टरपंथियों के अलावा कोई दुश्मन नहीं हो सकता है।

बीके अस्पताल में सीटी स्कैन, एमआरआई बना ठगी का धंधा

फ़रीदाबाद (म.मो.) बीके अस्पताल के डॉक्टर अपने यहां आने वाले जिस मरीज़ को भी किसी टैस्ट अथवा जांच आदि के लिये बाहर भेजते हैं तो हर जांच करने वाला, सम्बन्धित डॉक्टर को शाम तक उसका कमीशन भिजवा देता है। यानी अल्ट्रासाऊंड एक्सरे, सीटी स्कैन, एमआरआई या अन्य कोई जांच हो, मरीज से ली गई फ़ीस का एक हिस्सा सम्बन्धित डॉक्टर को जरूर मिलता है।

यह हिस्सा भेजना उसकी मजबूरी है, वरना डॉक्टर मरीज़ से कह देता है कि फ़लां के पास मत जाना क्योंकि उसकी जांच रिपोर्ट ठीक नहीं होती। बस मरीज़ को इतना कहना ही काफ़ी होता है, जांच की दुकान चलाने वाले का तो सारा धंधा ही चौपट हो जाता है।

उधर जांच का धंधा करने वाले कौन सा अपनी जेब से डॉक्टर को देते हैं। वे मरीज से दुगणा-तिगुणा वसूल लेते हैं। लुटाई तो अंतत: मरीज़ की ही होती है। इस लुटाई से बचाने के नाम पर सरकार ने बीके अस्पताल में ही पीपीपी मोड में सीटी स्कैन व एमआरआई की दुकान खोल दी है, परन्तु मरीज़ की लुटाई ज्यों की त्यों चल रही है। चले भी क्यों न, आखिर इसे चलाने वाला भी तो व्यापारी ही है जिसका उद्देश्य येन-केन प्रकारेण अधिकतम मुनाफ़ा कमाना ही है।

यहां मरीज़ों को लूटने का तरीका थोड़ा सा अलग बना हुआ है क्योंकि सरकार ने रेट तय कर रखे हैं जिससे अधिक ठेकेदार ले नहीं सकता। जैसे एमआरआई का रेट 900 रुपये तय कर दिया तो इसमें से 100 रुपये बतौर कमीशन डॉक्टर को देने में दिक्कत होती है। ऐसे में डॉक्टर लिखता है कंट्रास्ट एमआरआई किया जाय। उसका रेट डबल हो जाता है। इसमें से 200 रुपये डॉक्टर को भिजवाने में ठेकेदार को कोई दिक्कत नहीं होती। इसी लूट के चक्कर में लगभग सभी एमआरआई कंट्रास्ट कराये जाते हैं जबकि हर मामले में इसकी जरूरत नहीं होती।

जहां तक एमआरआई की जरूरत का सवाल है, उसकी तो कथा ही न्यारी है। पायल्स और फ़िश्चुला (बवासीर) का भी एमआरआई होता है, यह कभी कहीं देखा सुना नही गया। लेकिन यहां के डॉक्टर, केवल मरीज़ को ठगने के लिये इनका भी एमआरआई कराते हैं। सीटी स्कैन यहां छाती का भी बेजरूरत करा लिया जाता है। रात को हर जांच के रेट दुगणे हो जाते हैं। जाहिर है यह सारा धंधा लूट की दुकान चलाने वाले ठेकेदार का काम बढाने और सम्बन्धित डॉक्टरों की कमीशन कमाई के लिये हो रहा है।

अब यह तो संभव नहीं कि सीएमओ गुलशन अरोड़ा को इस गोरखधंधे का ज्ञान न हो। हां चुप रहने व आंखे मीचे रहने के लिये उन्हें भी उनका हिस्सा मिलना जरूरी है, वरना यह काला धंधा चल कैसे सकता है।

लाव लश्कर के साथ .....

पेज का एक शेष

अच्छा खासा फ़लता फूलता रहता है, परन्तु जब सबसे बड़ा पुलिस अफ़सर, वह भी बावर्दी बाबा की चरण वंदना करता है तो बाबा के भाव तो बढने स्वाभाविक ही हैं।

संधू जैसे लोग इन बाबों के भाव इतने अधिक बढा देते हैं कि ये आसाराम, रामपाल व राम रहीम आदि का रूप एवं आकार ग्रहण कर लेते हैं। फ़िर इनसे निपटने की बड़ी भारी कीमत भी इसी समाज को अदा करनी पड़ती है। स्वयं सन्धू की पुलिस को राम रहीम के भस्मासुरी अवतार को काबू में करने में तीस लोग मारने पड़े थे।

डीजीपी तो क्या किसी भी अफ़सर को बाबों की शरण में जाकर सुकून ढूंढने की बजाय अपने कानून व्यवस्था के काम में सुकून को ढूंढना चाहिये। यदि सौंपी गयी ड्यूटी को सही ढंग से किया जाय तो उससे प्राप्त सुकून का कोई मुकाबला नहीं हो सकता।

मेनका गांधी के आदमखोर कुत्तों ने.....

पेज एक का शेष

परिस्थिति को ध्यान में रखते हुये नागरिकों को अपने व अपने बच्चों की कुत्तों से रक्षा के लिये सरकारी भरोसा छोड़कर स्वयं लामबंद होना होगा। इसका उदाहरण सीतापुर के नागरिकों के अलावा फ़रीदाबाद के खिलाड़ियों ने भी प्रस्तुत कर रखा है। सुधी पाठकों ने **'मज़दूर मोर्चा' 29 अप्रैल-5 मई 2018** के अंक में पढा होगा कि कुत्ता काटे के शिकार होने पर स्थानीय खिलाड़ियों ने पहले तो इस बाबत नगर निगम में शिकायत की। जब वहां से कोई जवाब नहीं मिला और इस बीच उस कुत्ते ने एक और आदमी को भी काट लिया तो सभी खिलाड़ियों एवं मज़दूरों ने लट्ठ उठाकर उस कुत्ते को मार डाला। जब सरकार व इसके महकमे नकारा हो जाते हैं तो जनता को स्वयं कार्यवाही करनी ही पड़ती है जो कि वाजिब भी है।

खजुराहो एक्सप्रेस में जब फंसा एक बाबा...

हिन्दू शब्द न तो वेदों में, न उपनिषदों में, न महाभारत और रामायण में और न ही मनुस्मृति में। यह तो पारसी शब्द है, जो विदेशी आक्रांताओं का दिया हुआ है।

-त्रिभुवन

वे ट्रेन में आलथी-पालथी मारकर बैठे थे और सभी आसपास बैठे यात्रियों को उपदेश दे रहे थे। उन्होंने खानवा के मैदान में राणा सांगा के हाथों बाबर के पराजय पर एक अनुसंधान किया था। वे बता रहे थे कि उनके शोध को तत्कालीन सरकार से समर्थन मिलता रहता और उन्हें विश्वविद्यालय से षड्यंत्रपूर्वक नहीं हटाया जाता तो वे अपने अनुसंधान से इतिहास की इस पहेली को भी सुलझा देते कि पृथ्वीराज चौहान ने वास्तव में तराईन के तीसरे युद्ध में किस तरह मुहम्मद गोरी को नाकों चने चबवाकर एक जेल में डाल दिया था।

खजुराहो उदयपुर सिटी से अभी मावली पहुंची ही थी कि बिना मूछ लेकिन दाढ़ी वाले एक तरुण ने उनसे प्रश्न किया- लेकिन तराईन के तीसरे युद्ध में तो इल्तुतमिश अलाउद्दीन खिलजी को हराने के बाद दिल्ली ले गया था और उसे ग़लियों में घुमाकर अपमानित किया था। इसके बाद उसे बदायूं भेज दिया और उसकी हत्या करवा दी।

वे तरुण को आंखें फाड़-फाड़कर देख रहे थे। उन्होंने अपना रामनामी दुशाला ठीक किया और बोले - तुम्हारा इतिहास ठीक नहीं है। तुमने वाममार्गियों का लिखा इतिहास पढ़ा है। यह दूषित इतिहास है। तुम लोग धर्मद्रोही हो। इसलिए दूषित ही पढ़ते हो।

तरुण को लगा कि उन्होंने उसके धर्म पर टिप्पणी की है। तरुण मुस्कुराया। वे थोड़ा चकराए। तरुण के साथ एक दूसरा तरुण भी था। उसके माथे पर हल्का सा चंदन लगा था। चित्तौड़गढ के स्टेशन से निकल कर खजुराहो धड़धड़ा रही थी। दूसरा तरुण इन साधु महाराज से बोला- गुरुजी, ये हिन्दू है। आप अभी चित्तौड़ के दुर्ग को देख रहे हो ना। उसका पूरा शिल्प इनके पुरखों का ही है। लेकिन मैं मुसलमान हूं!

वे भीलवाड़ा तक सोचते रहे और आखिर उस समय बोले जब ट्रेन अजमेर को क्रॉस कर रही थी। उन्होंने कहा- इस देश में कोई मुसलमान नहीं है। सब हिन्दू ही हैं। तरुण बोला-मुसलमान हिन्दू कैसे? वे बोले- ये हिन्दुस्थान है। इसलिए।

वे बोले, हिन्दुस्थान में रहने वाले सबके सब मुसलमान हिन्दू, ईसाई हिन्दू, सिख हिन्दू, जैन हिन्दू, बौद्ध हिन्दू, तू हिन्दू, मैं हिन्दू। सब हिन्दू! वे किशनगढ़ तक यही रट लगाते रहे और बिलकुल भी चुप नहीं हुए। ट्रेन के स्लीपर कोच में बैठे सबके सब लोग ऊंघते रहे और उन्हें देखते रहे। कोई भी सो नहीं पाया था। सब लोगों को लग रहा था कि बाबाजी बिलकुल सही कह रहे हैं और यह लड़का नाहक बहस कर रहा है।

तरुण ने कहा - लेकिन बाबाजी, ये हिन्दू शब्द न तो वेदों में, न उपनिषदों में, न महाभारत और रामायण में और न ही मनुस्मृति में। यह तो पारसी शब्द है, जो विदेशी आक्रांताओं का दिया हुआ है। क्या आप विदेशी आक्रांताओं की दी हुई एक नकारात्मक संज्ञा पर गर्व करना चाहेंगे? बाबाजी बोले - तुम कुछ नहीं जानते। बस नाम सुन लिया। बाबा ने तर्क दिया-वेदों, उपनिषदों, षडदर्शन, महाभारत, रामायण आदि समस्त ग्रंथों में लिखा है- गर्व से कहो, हम हिन्दू हैं! तुम कुरआन, बाइबिल और जेंदावेस्ता में भी पढ़ोगे तो यही मिलेगा। सब कुछ हिन्दू है इस पावन धरा का।

ट्रेन फुलेरा पहुंच चुकी थी और तरुण था कि बाबाजी की बातों को तर्क से काटे जा रहा था। उसने आईपैड निकाला और बाबाजी को वेद, उपनिषद, दर्शनग्रंथ, महाभारत और रामायण के एचडी रिजोल्यूशन में ईपब्लिकेशन दिखाने लगा। ट्रेन जयपुर पहुंच चुकी थी और बाबाजी का गुस्सा बढ़ता जा रहा था। वह बोले- लड़के, तू क्या है? वामपंथी है ना दुष्ट!

तरुण ने कहा-लेकिन मैं भारतीय हूं। हिन्दू हूं। वह बोले-दुष्ट, तुम देशद्रोही हो!

यह कहकर उस प्रात: वेला में जब ट्रेन जयपुर स्टेशन पर खड़ी थी-बाबा जी गोमुखी में हाथ डालकर प्रार्थना में लीन हो गए। वे कुछ का कुछ बड़बड़ा रहे थे। कुछ भक्तिभाव भरे लोगों ने सुना कि वे कह रहे थे- मुसलमान हिन्दू, ईसाई हिन्दू, सिख हिन्दू, जैन हिन्दू, बौद्ध हिन्दू, तू हिन्दू, मैं हिन्दू। सब हिन्दू! हिन्दू देशद्रोही! तू तू तू!

घर बैठे प्राप्त करें मज़दूर मोर्चा

आज ही अपने हॉकर से कहें कोई दिक्कत हो तो शर्मा न्यूज एजेंसी से फोन नं 9811159238 पर बात करें। बल्लभगढ के पाठक अरोडा न्यूज एजेंसी से 9811477204 पर बात करें:

अन्य बिक्री केन्द्र :

1. **आनंद मैगजीन सैंटर केसी रोड, एनएच-5**
2. **प्रिंट फोर्ट, टेलीफोन एक्सचेंज के सामने नेहरू ग्राउंड**
3. **रेलवे बुक स्टाल ओल्ड रेलवे स्टेशन**
4. **5 ई-18 नरेन्द्र बुक सेन्टर - 9810229192**
5. **एनआईटी रेलवे स्टेशन के बाहर बाटा चौक पुल के नीचे**
6. **राम खिलावन बल्लबगढ़ बस अड्डा पुलिस चौकी के सामने**
7. **हितेश ग्रोवर सैक्टर 29 पेट्रोल पम्प के पास**
8. **जितेन्द्र, बाटा सैंटर - 9971064207**
9. **सिंगला मेडिकल स्टोर, जवाहर कॉलोनी, डिस्पोजल चौक**
10. **आरसीएम स्टोर, बाबा बालकनाथ मंदिर वाली गली, जवाहर कालोनी, फ़रीदाबाद**